'चिन्ता और कारण':नगेन्द्र फौजदार

कार्तिक माह के अन्तिम सप्ताह में जब सूर्यदेव अपना प्रभाव प्रथम पहर के बाद छोड़ते हैं , ऐसी एक भीगी सुबह में श्रीमती रमा द्विवेदी की भेंट अकस्मात् गुलाबी शहर के एक बालोद्यान के सिंहद्वार के सामने बिछी बेंच पर बैठी अवसादग्रस्त श्रीमती कल्पना राय से हुई। घनिष्ठ मित्रता में किसी औपचारिकता का कोई स्थान नहीं होता, यही सोचकर बहुत समय के बाद मिली श्रीमती रमा ने अपनी सहेली की चिन्तित मुख-मुद्रा को भाँपकर सीधा प्रश्न किया- "क्या बात है कल्पना ! है तो किसी बड़ी चिन्ता मे? "

"क्या बताऊँ रमा ! बच्चों की चिन्ता ही मेरी परेशानी का कारण है।"

"अरे ! तुमने लड़की को ससुराल भेज दिया, राकेश और अमित भी 'सैटल्ड़' हो गए; फिर भी...!"

श्रीमती कल्पना से कोई प्रत्युत्तर प्राप्त ना हो सका।

कुछ क्षण के लिए मौन ने हठात् अपना स्थान बना लिया था। पास रखी पानी की बोतल को आधा गटकने के बाद श्रीमती राय ने बिखरे-से अतिमन्द स्वर में बोलने का प्रयास किया- "यही तो चिन्ता है कि मेरी सोनिया वहाँ कोई दुख ना पाए और...बहुएँ , मेरे बेटों को 'सैपरेट' घर में रहने के लिए विवश ना कर दें...! "

कहते-कहते कल्पना की मुख-ध्वनि गले में सिमट कर रह गई और मौन ने फिर एक बार अपना कोलाहल शुरू कर दिया। अब पसीने के महीन कण श्रीमती रमा द्विवेदी के चेहरे पर नृत्य करने लगे थे, अन्तर था केवल कारण का। रमा की चिन्ता का विषय, उसकी बीस वर्षीय बेटी के लिए योग्य वर की तलाश का था और बेटों के लिए स्थायी रोज़गार का।

_नगेन्द्र फौजदार